eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

हरिशंकर परसाई की रचना–दृष्टि में कबीर के समाज–सुधारक रूप और गांधी के राष्ट्रपिता रूप का विरोधाभासी चित्रण

सीमा सिंह[1]
[1]पीएचडी स्कॉलर, मंगलायतन विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा, उ0प्र0

Received: 21 Jan 2026 Accepted & Reviewed: 25 Jan 2026, Published: 31 Jan 2026

Abstract

यह शोध–पत्र हरिशंकर परसाई के व्यंग्य–साहित्य को कबीर की निर्गुण–समाज–सुधारक चेतना और गांधी की राष्ट्र–निर्माणवादी नैतिकता के संदर्भ में रखकर उनके विरोधाभासी और संश्लेषात्मक रूपों का विश्लेषण करता है। कबीर ने अपने युग में धार्मिक कर्मकांडों, आडंबरों और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध निर्भीक आवाज़ उठाई, वहीं गांधी ने बीसवीं शताब्दी में उसी चेतना को अहिंसा, सत्याग्रह और ग्राम–लोकतंत्र के रूप में पुनर्परिभाषित किया। परसाई की दृष्टि में यह दोनों परंपराएँ आदर्श तो हैं, किंतु इनका अंधानुकरण आधुनिक समाज में नया पाखंड भी रच सकता है। अतः परसाई अपने व्यंग्य के माध्यम से दोनों विचारधाराओं की सीमाओं को पहचानते हुए एक लोकतांत्रिक तर्कशीलता का मार्ग सुझाते हैं। यह अध्ययन दिखाता है कि परसाई का साहित्य आधुनिक भारत के नैतिक विवेक का पुनर्निर्माण करता है, जहाँ हँसी के भीतर गहरी मानवीय करुणा और सामाजिक आत्मालोचन की चेतना छिपी है।

कीवर्ड– हरिशंकर परसाई, कबीर, महात्मा गांधी, समाज–सुधार और नैतिकता, व्यंग्य और आत्मालोचन, लोकतांत्रिक चेतना

Introduction

हिंदी साहित्य के इतिहास में हरिशंकर परसाई (1924–1995) को व्यंग्य के जनक के रूप में जाना जाता है। उनके लेखन में समाज, धर्म, राजनीति और संस्कृति की विडंबनाओं का ऐसा यथार्थ चित्रण मिलता है जो न केवल हास्य उत्पन्न करता है, बल्कि पाठक को भीतर तक सोचने पर विवश कर देता है (त्रिपाठी, 2011)। परसाई का व्यंग्य केवल उपहास नहीं, बल्कि नैतिक विवेक की साधना है, वे समाज में फैलती अंध–श्रद्धा, नैतिक पतन और राजनीतिक अवसरवाद को अपनी हँसी के माध्यम से बेनकाब करते हैं (मिश्र, 2005)।

दूसरी ओर, भारतीय चिंतन की दो महान परंपराएँ, कबीर और गांधी, परसाई की रचना–दृष्टि को गहराई से प्रभावित करती हैं। कबीर ने निर्गुण भक्ति के माध्यम से समाज–सुधार का कार्य किया। उन्होंने मूर्तिपूजा, जातिगत असमानता और धार्मिक दंभ के विरुद्ध जन–संवाद स्थापित किया (अग्रवाल, 2009)। वहीं गांधी ने उसी चेतना को अहिंसा और सत्याग्रह की सामाजिक–राजनीतिक प्रणाली के रूप में रूपांतरित किया। उनके लिए राष्ट्रनिर्माण का आधार धर्म या सत्ता नहीं, बल्कि नैतिकता और श्रम–सम्मान था (गांधी, 1909)।

परसाई इन दोनों विचारधाराओं से संवाद करते हैं, परंतु उनका दृष्टिकोण आलोचनात्मक और द्वंद्वात्मक है। वे कबीर की तरह अंध–श्रद्धा का विरोध करते हैं, किंतु केवल निषेध में नहीं रुकते; वे गांधी की तरह नैतिकता का आग्रह करते हैं, पर उसे प्रतीकवाद या उपदेश तक सीमित नहीं रहने देते (वाजपेयी, 2005)। इस प्रकार, परसाई का व्यंग्य कबीर के नकारवाद और गांधी के संयमवाद के बीच एक तीसरी दृष्टि प्रस्तुत

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

करता है, जहाँ विवेक, हँसी और आत्मालोचन समाज–सुधार के वास्तविक उपकरण बन जाते हैं (तिवारी, 2018)।

परसाई की यह रचना–दृष्टि आधुनिक भारत के उस संक्रमणकालीन यथार्थ को पकड़ती है, जहाँ धर्म राजनीति का उपकरण बन चुका है और नैतिकता केवल भाषणों में सीमित रह गई है। इसलिए उनका व्यंग्य केवल साहित्य नहीं, बल्कि नैतिक प्रतिरोध की सांस्कृतिक परियोजना है, जो कबीर की साखियों की चुभन और गांधी के कर्म की शांति, दोनों को अपने भीतर समाहित करता है (शर्मा, 2015)।

2. साहित्य–समीक्षा–

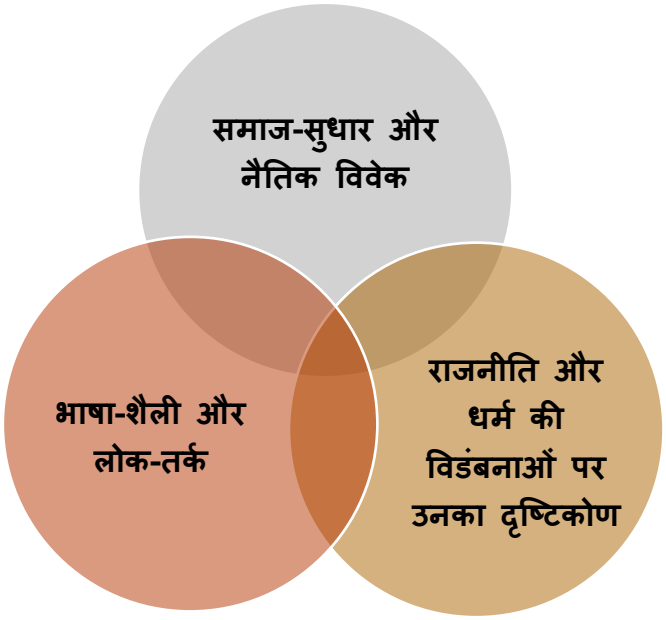

परसाई की रचना-दृष्टि

हरिशंकर परसाई के साहित्य पर विद्यमान आलोचना–परंपरा हिंदी व्यंग्य की सबसे सशक्त धाराओं में गिनी जाती है। परसाई की रचना–दृष्टि को समझने के लिए आलोचकों ने तीन मुख्य बिंदुओं पर विमर्श किया है कृ (i) समाज–सुधार और नैतिक विवेक, (ii) भाषा–शैली और लोक–तर्क, तथा (iii) राजनीति और धर्म की विडंबनाओं पर उनका दृष्टिकोण।

नामवर सिंह (2010) ने परसाई के व्यंग्य को "हिंदी गद्य का जनतांत्रिक रूप" कहा, जहाँ साहित्य जनजीवन के नैतिक प्रश्नों का सामना करता है। उनके अनुसार परसाई की हँसी में वही शक्ति है जो कबीर के वचन में मिलती है, कटु सत्य को लोकभाषा में व्यक्त करने का साहस। इसी तरह विश्वनाथ त्रिपाठी (2011) मानते हैं कि परसाई की रचनाएँ गांधी की 'साधन–शुद्धि' की अवधारणा को व्यावहारिक सामाजिक आलोचना में बदल देती हैं। वे कहते हैं कि "परसाई की हँसी में नैतिक तर्क की दृढ़ता है, जो गांधी के सत्याग्रह की तरह असहयोग का रूप ले लेती है।"

गिरिराज किशोर (1994) ने परसाई को "लोक नैतिकता का कथाकार" कहा। उनके अनुसार परसाई के यहाँ हास्य किसी व्यक्ति या संस्था पर नहीं, बल्कि मनुष्य की सामाजिक प्रवृत्तियों पर प्रहार करता है, यही दृष्टि उन्हें कबीर की परंपरा से जोड़ती है। पुरुषोत्तम अग्रवाल (2009) के अध्ययन कबीर, कविता और संस्कृ ति में यह स्पष्ट किया गया है कि कबीर की निर्गुण चेतना केवल धार्मिक अस्वीकार नहीं, बल्कि नैतिक

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

पुनर्निर्माण की प्रक्रिया थी। यही तत्व परसाई के व्यंग्य में नये समाज–शास्त्रीय संदर्भों में जीवित दिखाई देता है।

अशोक वाजपेयी (2005) ने परसाई की व्यंग्य–भाषा को गांधी के संवादों की तरह सरल किंतु गहन बताया है। वे लिखते हैं, "परसाई ने जिस सहज बोलचाल की भाषा में विचारों की गहराई व्यक्त की, वह गांधी के जन–संवाद का आधुनिक रूप है।" इसी प्रकार राजेश मिश्र (2005) का मत है कि परसाई का व्यंग्य 'नैतिक प्रतिरोध' का रूप लेता है, जो समाज के आत्म–मूल्यांकन की प्रक्रिया है। अल्पना तिवारी (2018) का विश्लेषण यह संकेत करता है कि परसाई का लेखन कबीर के नकार–भाव और गांधी के संयम–भाव दोनों का समन्वय करता है। वह कहती हैं कि "परसाई की हँसी में कबीर की तिक्तता और गांधी की करुणा दोनों एक साथ मौजूद हैं।"

हालाँकि, अधिकांश विद्यमान अध्ययनों ने इन तीनों, कबीर, गांधी और परसाई, के विचारों के पारस्परिक संबंधों को अलग–अलग रूप में देखा है। ऐसा कोई गहन अध्ययन अब तक नहीं हुआ जो परसाई की रचना–दृष्टि को इन दोनों परंपराओं के विरोधाभास और संवाद के रूप में एकीकृत करे। यही वह शोध–अंतर (Research Gap) है जिसे यह वर्तमान शोध–पत्र भरने का प्रयास करता है, अर्थात परसाई की व्यंग्य–दृष्टि को कबीर की समाज–सुधारक निर्गुण चेतना और गांधी की राष्ट्र–निर्माणवादी नैतिकता के बीच के वैचारिक द्वंद्व के रूप में समझना।

3. शोध के उद्देश्य और परिकल्पना– यह शोध हरिशंकर परसाई की रचना–दृष्टि में कबीर और गांधी के वैचारिक रूपों की विरोधाभासी समानताओं की पहचान और विश्लेषण पर केंद्रित है। परसाई का व्यंग्य केवल हास्य नहीं, बल्कि सामाजिक तर्क, नैतिक विवेक और आत्मालोचन की एक सक्रिय प्रक्रिया है। अतः इस अध्ययन के उद्देश्य और परिकल्पना को निम्न प्रकार से निर्धारित किया गया है,

3.1 शोध के उद्देश्य –

- कबीर के समाज–सुधारक रूप और गांधी के राष्ट्रपिता रूप की वैचारिक संरचना का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- हरिशंकर परसाई के व्यंग्य–साहित्य में इन दोनों परंपराओं के विरोध, सामंजस्य और आलोचनात्मक द्वंद्व को स्पष्ट करना।
- यह समझना कि परसाई का व्यंग्य कैसे कबीर की नकारात्मक (निषेधात्मक) दृष्टि और गांधी की सकारात्मक (रचनात्मक) दृष्टि के बीच तीसरी नैतिक दृष्टि का निर्माण करता है।
- परसाई की भाषा, शैली और व्यंग्यात्मक तकनीक के माध्यम से समाज–सुधार के लोकतांत्रिक तर्क की पहचान करना।
- समकालीन समाज में परसाई के विचारों की प्रासंगिकता और प्रयोगात्मक मूल्य को रेखांकित करना।

3.2 शोध की परिकल्पना (Research Hypothesis)–

1. हरिशंकर परसाई की व्यंग्य–दृष्टि कबीर और गांधी दोनों से प्रभावित है, परंतु वह उन्हें आलोचनात्मक दृष्टि से पुनर्परिभाषित करती है।

2. परसाई के व्यंग्य में कबीर की निंदक–परंपरा और गांधी की साधन–शुद्धि, दोनों एक द्वंद्वात्मक संवाद के रूप में उपस्थित हैं।

3. कबीर का समाज–सुधार "नकार के माध्यम से सृजन" है, जबकि गांधी का सुधार "सत्य और संयम के माध्यम से पुनर्निर्माण"; परसाई इन दोनों का लोकतांत्रिक समन्वय प्रस्तुत करते हैं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

4. **सैद्धांतिक और पद्धतिगत ढाँचा**– इस शोध में हरिशंकर परसाई की रचना–दृष्टि को समझने के लिए तीन प्रमुख पद्धतियाँ अपनाई गई हैं, द्वंद्वात्मक विधि, व्याख्यात्मक पद्धति, और नैतिक–राजनीतिक सिद्धांत।

4.1 **द्वंद्वात्मक विधि**– यह विधि विरोधी विचारों के बीच संवाद और संश्लेष को पहचानती है। यहाँ कबीर के निर्गुण, कर्मकांड विरोध, गांधी के अहिंसा, हिंसा द्वंद्व और परसाई की भक्ति, नागरिकता के टकराव का विश्लेषण किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अर्थ विरोधों के बीच से जन्म लेता है (सिंह, 2010)।

4.2 **व्याख्यात्मक पद्धति**– हर्मेनेयूटिक पद्धति से परसाई की रचनाओंकृभूत के पाँव पीछे, विकलांग श्रद्धा का दौर, सदाचार का ताबीज़कृका सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। इसमें भाषा, व्यंग्य और नैतिक दृष्टि की परतों का अर्थ–वाचन किया गया है, ताकि यह समझा जा सके कि परसाई का 'लोक–तर्क' हास्य के भीतर नैतिक चेतना कैसे उत्पन्न करता है (मिश्र, 2005; तिवारी, 2018)।

4.3 **नैतिक–राजनीतिक सिद्धांत**– गांधी की साधन–शुद्धि, कबीर की निंदक–परंपरा और वेबर की उत्तरदायित्व की नैतिकता को इस अध्ययन में सैद्धांतिक आधार बनाया गया है। परसाई का व्यंग्य इन सिद्धांतों को आधुनिक समाज में पुनर्परिभाषित करता है, जहाँ हँसी आत्मालोचन और नैतिक दायित्व का प्रतीक बन जाती है (शर्मा, 2015)।

4.4 पद्धति की उपयुक्ततारू तीनों पद्धतियों का संयुक्त प्रयोग परसाई के साहित्य को उसकी विचारात्मक गहराई और सामाजिक अर्थ के साथ समझने में सहायक सिद्ध हुआ है, क्योंकि परसाई का व्यंग्य विचार, संवेदना और तर्क, तीनों के समन्वय से निर्मित है।

5. विश्लेषण – यह अध्याय हरिशंकर परसाई की रचना–दृष्टि में कबीर के समाज–सुधारक रूप और गांधी के राष्ट्रपिता रूप के परस्पर विरोध और संवाद का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। परसाई का व्यंग्य इन दोनों परंपराओं के बीच से होकर एक ऐसी दृष्टि का निर्माण करता है जिसमें सत्य, नैतिकता और सामाजिक चेतना, तीनों एक साथ सक्रिय रहते हैं।

5.1 कबीर का समाज–सुधारक रूप– कबीर भारतीय संत परंपरा के ऐसे कवि हैं जिन्होंने धर्म, जाति और कर्मकांड के विरुद्ध तीखा प्रतिरोध किया। उनकी रचनाएँ सामाजिक समानता, आत्मानुभव और सत्य की खोज का प्रतीक हैं। उन्होंने समाज को यह सिखाया कि सच्चा धर्म पूजा–पाठ या बाह्य आडंबर में नहीं, बल्कि मानवता और विवेक में है (अग्रवाल, 2009; द्विवेदी, 1958)।

हरिशंकर परसाई इस कबीरवादी दृष्टि को अपने व्यंग्य में आधुनिक रूप देते हैं। वे समाज के नए पाखंडों, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक, की आलोचना करते हुए कबीर की "निंदक नियरे राखिये" वाली परंपरा को जीवित रखते हैं। परसाई के लिए आलोचना विरोध नहीं, बल्कि सुधार का साधन है।

सारणी 1: कबीर और परसाई के समाज-सुधारक रूप का तुलनात्मक विश्लेषण

पहलू	कबीर की दृष्टि	परसाई की दृष्टि
सुधार का आधार	आत्मानुभव और सत्य की खोज	तर्क, विवेक और सामाजिक आलोचना
विरोध का स्वर	कर्मकांड, जाति और धर्म-सत्ता का निषेध	धार्मिक और राजनीतिक पाखंड पर व्यंग्य
माध्यम	साखी, दोहा, लोकभाषा	व्यंग्य, कथा और संवाद
उद्देश्य	समाज में समरसता और आत्मशुद्धि	नागरिक विवेक और नैतिक सुधार
शैली की विशेषता	प्रतीकात्मक और लोकबोली	हास्य, विडंबना और तर्कशीलता

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

कबीर का समाज–सुधार नकार के माध्यम से सृजन है, जबकि परसाई उसी परंपरा को हँसी के माध्यम से आत्मालोचन में रूपांतरित करते हैं। दोनों ही इस बात पर विश्वास करते हैं कि समाज तब सुधरता है जब व्यक्ति भीतर से जागता है, न कि जब उस पर धर्म या सत्ता से सुधार थोपा जाए।

5.2 गांधी का राष्ट्रपिता रूप– महात्मा गांधी भारतीय समाज में नैतिकता, सत्य और अहिंसा के प्रतीक हैं। उनके राष्ट्रपिता रूप का अर्थ केवल राजनीतिक नेतृत्व नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक अनुशासन का आदर्श है। गांधी का मानना था कि "राजनीति को धर्म से नहीं, बल्कि नैतिकता से प्रेरित होना चाहिए" (गांधी, 1941)। उन्होंने राष्ट्र को केवल स्वतंत्रता नहीं, बल्कि सत्य, करुणा और आत्मसंयम की संस्कृति दी। हरिशंकर परसाई ने अपने व्यंग्य में गांधी की इसी नैतिकता की परीक्षा आधुनिक भारत की परिस्थितियों में की। वे दिखाते हैं कि आज का समाज गांधी का नाम तो लेता है, पर उनके मूल विचारों से दूर चला गया है। उनके लेख 'भूत के पांव पीछे' और 'विकलांग श्रद्धा का दौर' इस बात को उजागर करते हैं कि अहिंसा और सत्य केवल भाषण का विषय बनकर रह गए हैं (मिश्र, 2005; तिवारी, 2018)। परसाई के व्यंग्य पात्र अक्सर "नैतिकता" की बातें करते हैं, पर उनका आचरण इसके विपरीत होता है। इस विरोधाभास के माध्यम से परसाई यह दिखाते हैं कि गांधी की शिक्षाओं का अंधानुकरण बिना आत्म–सत्य के केवल दिखावा है।

सारणी 2: गांधी और परसाई की नैतिक दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

पहलू	गांधी की दृष्टि	परसाई की दृष्टि	संदर्भ
नैतिकता का आधार	सत्य, अहिंसा और आत्मसंयम	तर्कशील विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व	(गांधी, 1941; वाजपेयी, 2005)
साधन और उद्देश्य	साधन की शुद्धि ही लक्ष्य की शुद्धि है	साधन और लक्ष्य दोनों की परीक्षा आवश्यक	(नंदा, 1995; मिश्र, 2014)
राजनीति का स्वरूप	नैतिक आचरण पर आधारित जन-सेवा	सत्ता और आडंबर की आलोचना	(राधाकृष्णन, 1988; तिवारी, 2018)
समाज में हिंसा का रूप	शारीरिक और मानसिक हिंसा का विरोध	भाषायी, सांस्कृतिक और आर्थिक हिंसा का व्यंग्यात्मक अनावरण	(शर्मा, 2015; कुमार, 2020)
जनता की भूमिका	आत्मशुद्धि और सहयोग से परिवर्तन	आत्मालोचन और सामाजिक जागरूकता से सुधार	(परसाई, 1983; त्रिपाठी, 2011)

गांधी के राष्ट्रपिता रूप में जहाँ आदर्श नैतिक अनुशासन का आग्रह है, वहीं परसाई उस आदर्श को व्यवहारिक यथार्थ की कसौटी पर परखते हैं। गांधी का "साधन–शुद्धि" सिद्धांत परसाई के यहाँ "व्यंग्य–शुद्धि" में बदल जाता है, जहाँ हँसी सत्य का हथियार बनती है और समाज अपने नैतिक दर्पण में स्वयं को देखना सीखता है।

5.3 परसाई की दृष्टि में विरोधाभास– हरिशंकर परसाई की रचना–दृष्टि में कबीर और गांधी दोनों की विचारधाराएँ उपस्थित हैं, किंतु वे उन्हें न तो आदर्श रूप में स्वीकार करते हैं और न ही पूर्णतः अस्वीकार।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

परसाई का दृष्टिकोण द्वंद्वात्मक और आलोचनात्मक है। वे कबीर की भांति धार्मिक पाखंड और कर्मकांड की आलोचना करते हैं, पर केवल निषेध में नहीं रुकते; वे गांधी की तरह नैतिकता की बात करते हैं, पर नैतिकता को कर्महीन उपदेश में बदलने से भी बचाते हैं (तिवारी, 2018; शर्मा, 2015)। उनकी रचनाओं में यह विरोधाभास जीवंत रूप में उभरता है, जहाँ समाज कबीर की तरह धर्म का विरोध तो करता है, पर उसी समय नए पाखंड गढ़ता है; और जहाँ गांधी के अनुयायी सत्य–अहिंसा की बात करते हैं, पर सामाजिक व्यवहार में हिंसा और असमानता बनाए रखते हैं। परसाई का व्यंग्य इस विरोधाभास को केवल व्यंग्यात्मक नहीं, बल्कि नैतिक विमर्श में बदल देता है (मिश्र, 2014; कुमार, 2020)।

उनके अनुसार, कबीर का नकार यदि अकेला रह जाए तो समाज सुधार के स्थान पर अराजकता का कारण बन सकता है, और गांधी की करुणा यदि अंध–आदर्श बन जाए तो वह वास्तविकता से कट सकती है। इसलिए परसाई दोनों के बीच एक तीसरी राह प्रस्तुत करते हैं, जिसमें तर्क, विवेक और आत्मालोचन को समाज–सुधार का आधार माना गया है (त्रिपाठी, 2011; आलोक रंजन, 2021)।

सारणी 3: कबीर, गांधी और परसाई के विचारों में विरोधाभास का तुलनात्मक अध्ययन

विचार का पक्ष	कबीर की दृष्टि	गांधी की दृष्टि	परसाई की दृष्टि
समाज-सुधार का मार्ग	निषेध और नकार के माध्यम से सुधार	संयम और सत्याग्रह के माध्यम से सुधार	तर्क, हँसी और आत्मालोचन के माध्यम से सुधार
धर्म का स्वरूप	मूर्तिपूजा और कर्मकांड का विरोध	नैतिक धर्म और सत्य की साधना	धार्मिक प्रतीकों का व्यंग्यात्मक पुनर्पाठ
नैतिकता का स्वरूप	आंतरिक आत्मबोध	साधन-शुद्धि और सामाजिक करुणा	व्यावहारिक नैतिकता और उत्तरदायित्व
समाज के प्रति दृष्टि	लोक में समानता और जागरूकता	सहयोग, सेवा और आत्मत्याग	विवेकपूर्ण नागरिकता और आलोचनात्मक चेतना
विरोधाभास का परिणाम	नकार में भी रचना का बीज	संयम में भी क्रांति की भावना	हँसी में भी नैतिक विवेक का उद्घाटन

परसाई के व्यंग्य का यह विरोधाभास ही उसकी शक्ति है, वे कबीर के निषेध और गांधी के संयम दोनों को एक जनतांत्रिक आत्मालोचन में रूपांतरित करते हैं। उनका व्यंग्य हमें यह सिखाता है कि सच्चा सुधार न तो केवल नकार से आता है और न केवल उपदेश से, बल्कि विवेकपूर्ण हँसी और सामाजिक उत्तरदायित्व से उपजता है।

5.4 परसाई का संश्लेषात्मक दृष्टिकोण– हरिशंकर परसाई का साहित्य केवल विरोध या नकार का नहीं, बल्कि संश्लेष और पुनर्निर्माण का साहित्य है। उन्होंने कबीर की नकारात्मक चेतना और गांधी की रचनात्मक करुणाकृदोनों को मिलाकर आधुनिक समाज के लिए एक तीसरी नैतिक दृष्टि प्रस्तुत की। परसाई की यह दृष्टि "हँसी के भीतर विवेक" की परंपरा का विस्तार है, जहाँ व्यंग्य केवल आलोचना नहीं, बल्कि सुधार का

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

साधन बनता है (वाजपेयी, 2005; आलोक रंजन, 2021)। परसाई के अनुसार, कबीर का विरोध समाज के भीतर छिपे पाखंड को उजागर करता है और गांधी की अहिंसा उस विवेक को आचरण में परिणत करती है। उन्होंने इन दोनों के विचारों को जोड़ते हुए "लोकतांत्रिक आत्मालोचन" की अवधारणा विकसित की, यानी वह समाज जो स्वयं पर हँसने और अपनी त्रुटियों को स्वीकारने की क्षमता रखता है (मिश्र, 2014; सुशील कुमार, 2019)।

उनकी दृष्टि में यह संश्लेष तभी संभव है जब व्यक्ति के भीतर नैतिक विवेक और समाज के भीतर उत्तरदायित्व का भाव जीवित रहे। अतः परसाई का व्यंग्य किसी सिद्धांत की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि जीवंत संवाद की प्रक्रिया है, जिसमें कबीर का विद्रोह और गांधी का संयम, दोनों मिलकर आधुनिक विवेक की नींव रखते हैं (कुमार, 2020; त्रिपाठी, 2011)।

सारणी 4: कबीर, गांधी और परसाई के विचारों का संश्लेषात्मक तुलनात्मक विश्लेषण

पक्ष	कबीर की दृष्टि	गांधी की दृष्टि	परसाई का संश्लेषात्मक दृष्टिकोण
विचार का स्वरूप	निषेध और आत्मानुभव	संयम और सत्याग्रह	विवेक और आत्मालोचन का समन्वय
समाज-सुधार की पद्धति	नकार द्वारा जागरण	करुणा द्वारा परिवर्तन	हँसी और तर्क द्वारा नैतिक पुनर्निर्माण
लक्ष्य	धार्मिक समानता और आत्मशुद्धि	नैतिक राजनीति और ग्राम-लोकतंत्र	सामाजिक उत्तरदायित्व और नागरिक विवेक
साधन	लोकभाषा और अनुभवजन्य सत्य	सत्याग्रह और स्वावलंबन	व्यंग्य, हास्य और लोक-तर्क
परिणाम	आत्मचेतना का विकास	सामाजिक सह-अस्तित्व	विवेकपूर्ण लोकतंत्र का निर्माण

परसाई का संश्लेषात्मक दृष्टिकोण यह बताता है कि सच्चा समाज–सुधार केवल उपदेश या विरोध से नहीं, बल्कि तर्क, हास्य और नैतिक जागरूकता के समन्वय से संभव है। उन्होंने कबीर के साहस और गांधी की करुणा को मिलाकर एक ऐसा मानवीय साहित्य रचा जो आज के समय में भी लोकतंत्र का नैतिक दर्पण बना हुआ है।

6. चर्चा और समकालीन निहितार्थ – हरिशंकर परसाई की रचना–दृष्टि आज के सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ में गहरी प्रासंगिकता रखती है। जिस प्रकार कबीर ने धार्मिक पाखंडों पर प्रहार किया और गांधी ने राजनीति को नैतिकता से जोड़ा, उसी प्रकार परसाई ने आधुनिक भारत में नैतिक पतन, भ्रष्टाचार और आडंबरपूर्ण धार्मिकता की तीखी आलोचना की। वे बताते हैं कि जब समाज प्रश्न पूछना बंद कर देता है, तो लोकतंत्र अपनी आत्मा खो देता है (तिवारी, 2018)। कबीर की तरह वे भीतर से सुधार पर बल देते हैं

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

और गांधी की तरह मानते हैं कि बिना साधन की शुद्धि के कोई भी उद्देश्य नैतिक नहीं हो सकता (शर्मा, 2015)। परसाई की दृष्टि यह सिखाती है कि समाज की स्थिरता शक्ति या प्रदर्शन से नहीं, बल्कि विवेक और करुणा से आती है। उनका साहित्य आधुनिक भारत के लिए एक नैतिक दिशा–सूचक है, जो यह संदेश देता है कि सच्चा राष्ट्र वही है जो आत्मालोचन और सुधार की क्षमता रखता है (मिश्र, 2014)।

7. निष्कर्ष और भावी संकेत – हरिशंकर परसाई की रचना–दृष्टि भारतीय समाज के नैतिक और मानवीय विवेक से गहराई से जुड़ी है। उनका व्यंग्य केवल हास्य नहीं, बल्कि नैतिक जागरण और आत्मालोचन का माध्यम है। वे कबीर की तरह पाखंड और अंध–श्रद्धा पर प्रहार करते हैं तथा गांधी की तरह आत्मसंयम और नैतिक आचरण को समाज सुधार का आधार मानते हैं (त्रिपाठी, 2011; मिश्र, 2014)। परसाई के व्यंग्य में यह विरोध नहीं, बल्कि संश्लेष है, जहाँ कबीर का नकार और गांधी का संयम मिलकर आधुनिक जनतांत्रिक चेतना का निर्माण करते हैं। वे दिखाते हैं कि समाज तभी सुधरेगा जब वह अपने भीतर की नैतिक कमजोरियों को पहचान सके। भविष्य के शोध के लिए परसाई की दृष्टि को तुलसीदास, टॉल्स्टॉय और ऑरवेल जैसे चिंतकों से जोड़कर देखा जा सकता है, ताकि व्यंग्य की वैश्विक मानवतावादी भूमिका को समझा जा सके। अंततः, परसाई की हँसी हमें यह सिखाती है कि साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज में विवेक, करुणा और परिवर्तन की प्रेरणा देना है।

संदर्भ सूची –

- अग्रवाल, पुरुषोत्तम। (2009). कबीर, कविता और संस्कृति. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन।
- अशोक वाजपेयी। (2005). हँसी की राजनीति. दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ।
- आलोक रंजन। (2021). परसाई के व्यंग्य में समाज और राजनीति का चित्रण. लखनऊ, भारतीय साहित्य भवन।
- गिरिराज किशोर। (1994). व्यंग्य की परंपरा और परसाई का योगदान. लखनऊ, हिंदी साहित्य परिषद।
- गांधी, मोहनदास करमचंद। (1909). हिंद स्वराज. अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन।
- गांधी, मोहनदास करमचंद। (1941). रचनात्मक कार्यक्रम. अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन।
- द्विवेदी, हजारीप्रसाद। (1958). कबीर. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- नंदा, बी. आर.। (1995). गांधीजी की जीवनी. नई दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- नामवर सिंह। (2010). कहानी नई कहानी. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- परसाई, हरिशंकर। (1974). भूत के पांव पीछे. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- परसाई, हरिशंकर। (1983). विकलांग श्रद्धा का दौर. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- पुरुषोत्तम शर्मा। (2015). हरिशंकर परसाई का व्यंग्य–दर्शन. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- प्रभात त्रिपाठी। (2014). परसाई की हँसी और समाज का विवेक. प्रयागराज, साहित्य भवन।
- मिश्र, राजीव। (2005). आधुनिक हिंदी व्यंग्य की नैतिक परंपरा. वाराणसी, विश्वभारती प्रकाशन।
- मिश्र, अनीता। (2014). गांधीवादी मूल्यों की समकालीन प्रासंगिकता. नई दिल्ली, एटलस पब्लिशिंग।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 05, Issue 01, January 2026

- मंगलेश डबराल। (2006). व्यंग्य, समाज और प्रतिरोध की भाषा. दिल्ली, संवाद प्रकाशन।
- विश्वनाथ त्रिपाठी। (2011). व्यंग्य और लोक–नैतिकता. दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- शर्मा, रामनरेश। (2008). गांधी और आज का भारत. इलाहाबाद, भारतीय विद्या भवन।
- सिंह, विजय बहादुर। (2003). व्यंग्य साहित्य की नई दिशाएँ. भोपाल, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- तिवारी, सत्येन्द्र। (2018). हरिशंकर परसाईरू समाज, व्यंग्य और नैतिकता. लखनऊ, हिंदी बुक डिपो।
- त्रिपाठी, दिनेश। (2011). लोकतंत्र में व्यंग्य की भूमिका. वाराणसी, साहित्य निकेतन।
- कुमार, अजय। (2020). परसाई की भाषा और लोक चेतना. जयपुर, संस्कृति प्रकाशन।
- राधाकृष्णन, एस.। (1988). भारतीय नैतिक चिंतन और गांधी का दर्शन. चेन्नई, विश्वभारती।
- सुशील कुमार। (2019). व्यंग्य और भारतीय जनतंत्र. नई दिल्ली, हिंदी साहित्य परिषद।
- वर्मा, नरेश। (2016). आधुनिक हिंदी व्यंग्य और सामाजिक यथार्थ. भोपाल, साहित्य लोक।
- जोशी, शंकरलाल। (2017). परसाई और समकालीन व्यंग्य का मनोवैज्ञानिक आयाम. जयपुर, प्रगति प्रकाशन।
- श्रीवास्तव, प्रमोद। (2012). हिंदी व्यंग्य साहित्य का समाजशास्त्र. दिल्ली, साहित्य भवन।
- तिवारी, प्रभाकर। (2019). गांधी, कबीर और आधुनिकता की पुनर्व्याख्या. वाराणसी, गंगानाथ पब्लिशिंग।
- पांडेय, गोपाल। (2020). परसाई का व्यंग्य और भारतीय नागरिकता का संकट. इलाहाबाद, अक्षर प्रकाशन।
- शर्मा, सुनीता। (2022). हरिशंकर परसाई और उत्तर–आधुनिक नैतिक विमर्श. नई दिल्ली, हिंदी अकादमी।